Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

बनारस घराने की ख़्याल गायन शैली की विशिष्टता, ख्याल शैली में सौन्दर्य तत्वों का विश्लेषण एवं प्रस्तुतिकरण

GURJEET SINGH[1] & PROF. SHUCHISMITA SHARMA[2]

[1]Research Scholar, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra.
[2]Professor, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra.

सार

बनारस में विभिन्न गायन शैलियों के अन्तर्गत शास्त्रीय उपशास्त्रीय तथा लोक गायन शैलियों का सामान्य परिचय देना आवश्यक है जिनमें शास्त्रीय गायन शैलियों में छन्द, प्रबन्ध, विष्णुपद, ध्रुपद धमार, सादरा ख्याल, टपख्याल, उपशास्त्रीय गायन शैलियों में ठुमरी, दादरा, टप्पा, चैटी होरी कजरी तथा विभिन्न लोक गायन शैलियों में बारहमासा इत्यादि है बनारस में इन गायन शैलियों का विशिष्ट स्थान है इस शोध पत्र के अन्तर्गत बनारस घराने में प्रचलित ख्याल के संगीतिक अवयवों का विस्तृत विश्लेषण, आधुनिक समय में प्रचलित शास्त्रीय संगीत में ख्याल शैली का शीर्षस्थ है, और यह भी सर्वमान्य है कि संगीत में काव्य का अस्तित्व घुलनशील है। जो की सौन्दर्य वर्धक तथा रसनिष्पति में सहायक है ख्याल गायकी के सांगीतिक स्वरूप तथा प्रस्तुतीकरण का विश्लेषण करते हुए इस शैली के प्रकारों के उचित प्रयोग आदि का निरूपण विषय संगत होगा। बनारस घराने की ख्याल शैली की विशिष्टता ख्याल गायन की परम्परा में बनारस की ख्याल गायकी की अपनी कुछ विशेषता रही है जिसके आधार पर यहाँ की ख्याल गायन शैली को अन्य प्रचलित ख्याल गायन से अलग माना गया है। यहाँ चारों पट की गायकी विद्यमान रही है। जिसमें ध्रपुद, धमार, ख्याल, ठुमरी टप्पा से लेकर कजरी चैती गीत गज़ल लोक गीत आदि की मधुर गुंजन से रसिक श्रोताओं के कानों में मिठास घोल देती है। बनारस घराने की ख्याल शैली में सौन्दर्य तत्वों का विश्लेषण एवं प्रस्तुतिकरण दर्शाया गया है।

कुंजी शब्द: बनारस घराना, ख्याल शैली, भक्ति परक, सांगीतिक सौन्दर्य

काशी में संगीत की सभी विधाओं की अपनी-अपनी परम्परा चली आ रही है। गायन घराने के विविध शैलियों के विद्वान विभूतियों संगीत जगत् में अपार लोक-प्रियता एवं कीर्तिमान् स्थापित कर इस नगर को गौरवान्वित किया है। यहाँ के संगीतज्ञों ने गायन की विविध शैलियों को आत्मसात् करके उसे नये रूप में प्रस्तुत कर समग्र रूप से घराने को समृद्ध किया। ख़्याल गायन की परम्परा में बनारस की ख़्याल गायकी की अपनी कुछ विशेषता रही है जिसके आधार पर यहाँ की ख़्याल गायन शैली को अन्य प्रचलित ख़्याल गायन से अलग माना गया है। यहाँ चारों पट की गायकी विद्यमान रही है। जिसमें ध्रुपद, धमार, ख़्याल, ठुमरी, टप्पा से लेकर कजरी, चैती, गीत-गजल लोकगीत आदि की मधुर गुंजन से रसिक श्रोताओं के कानों में मिठास घोल देती है। काशी की संगीत परम्परा की कोई भी शैली, विधा एवं पक्ष अछूती अथवा अव्यवस्थित नहीं है। इस दृष्टि से यह कहना उचित प्रतीत होता है कि बनारस की संगीत परम्परा सर्वाधिक समृद्ध एवं गौरवशाली रही है।

बनारस घराने की गायकी बहुत प्राचीन है। ध्रुवपद (विष्णुपद) से लेकर लोकगीत गायन तक बनारस का सम्बन्ध है। कोई भी घराना अपनी विशिष्ट शैली, गुणों तथा लक्षणों का परिचायक होता है। घराने के कलाकार और शिष्य-मंडली अपनी उस शैली को पुष्ट करते हुए आने वाली पीढ़ियों को विरासत में सौंपते चले आएँ, तभी वह फलता-फूलता है। घराने में जब कोई कलाकार अप्रतिम प्रतिभाशाली, अति लोक प्रिय तथा विशाल श्रोतावर्ग को सम्मोहित करने की क्षमता वाला हो तब वह घराना अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लेता है। 15वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान तक बनारस घराने में ऐसे-ऐसे कलाकार कोहिनूर के रूप में हुए, जिन्होंने अपने तथा शिष्य प्रशिष्यों के माध्यम से अपनी परम्परा कायम रखते हुए अपना सूर्य प्रकाशमान रखा। बनारस घराने की गायकी में मौलिकता, कलात्मकता तथा उत्कृष्टता आदि देखने को मिलती है। राग की शुद्धता, स्पष्ट उच्चारण, बहलावा, साहित्य इत्यादि

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सभी गुण विद्यमान है। बनारस घराने की ख़्याल गायन शैली की विशेषता इस बन्दिश द्वारा परिलक्षित होती है जो निम्नलिखित रुप से है:-

राग शंकरा - झपताल

तान तलवार लय धनुष सुर तीर कर गमक गोला कर, तबही परमानिये

षोडश लेई पच्चीस अवगुण गुरे,

मर्च्छना श्रुतिन कर भेद नीको भरे

रामदास ऐसो ही युक्ति कर गुनी जनन

तब ही ओमकार आवे, तबही परमानिये

- बनारस घराने में राग के प्रकृति के अनुसार ही बन्दिश के बोल तथा शब्दों का चयन होता है। इसीलिए बंदिश का अभ्यास विशेष रुप से ध्यान पूर्वक किया जाता है। जैसी बंदिश होती है उसी के अनुरूप राग की बढ़त आदि का काम होता है। राग के स्वरूप को मन्द्र, मध्य तथा तार तीनों सप्तकों में दर्शाया जाता है । समयोचित रागों को उचित समय गाने बजाने एवं सिखाने की परम्परा भी रही अप्रचलित राग प्रकारों का चयन किया जाता है। स्वरों के लगाव पर विशेष ध्यान देना इस घराने की विशिष्टता रही. है । इस विशेषता के कारण यह घराना लोकप्रिय बना।
- बनारस घराने की गायकी बढ़त की गायकी है। काकू का प्रयोग, तीनों सप्तक की गायकी बेडार अंग की तानों का प्रयोग, तानों का स्पष्ट उच्चारण गायकी में खटका, मुर्की, मींड, गमक, वैविध्यपूर्ण तानें तथा लय युक्त गायकी इस घराने की अन्य विशेषतायें है ।
- राग का पूर्वांग वादी या उत्तरांगवादी होने का स्पष्टीकरण ये बारीकियाँ बन्दिश से ही पता लगती हैं। एक राग में एक बंदिश न होकर विविधता पूर्ण बन्दिश पायी जाती है। बनारस घराने की बन्दिशों और उनका अनोखा चलन अन्य घरानों से अलग हैं। राग की शुद्धता को बनाये रखते हुए कल्पनाशीलता और सृजनशीलता से उसे अनेक भावों में सजाया जाता है।
- गायकी पर खण्डमेरू पद्धति का प्रभाव गुरू शिष्य परम्परा की शिक्षा पद्धति सभी कलाकार गायन की सभी विधाओं जैसे - ध्रुपद, धमार, ख़्याल, चतुरंग, सरगम, टप्पा, टपख़्याल, ठुमरी, दादरा, होरी, चैती कजरी के साथ अनेक वाद्यों को बजाने में प्रवीण साथ-साथ कुछ विद्वान नृत्य में भी पारंगत हुये।
- उच्चकोटि की साहित्यिक रचनायें शब्द, स्वर, लय, ताल से युक्त, रागों के भावानुसार रचने की क्षमता । वाद्य वादन में भी सुन्दर बन्दिशें रचने की क्षमता।
- बनारस की ख़्याल गायकी में सादगी के साथ-साथ ओजस्विता एवं भाव की प्रधानता रही है। सधी हुई गोलाई युक्त आवाज, माधुर्य, सुन्दरता और लालित्य की प्रधानता लिये हुए संवाद युक्त गायन, गायन में साहित्यिक भाषा के साथ कंठ स्वर के शब्दों का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण का प्रयोग। मुद्रा दोष रहित गायन शैली का प्रयोग किया जाता था । भावपूर्ण स्वरों का लगाने का ढंग।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

- आलापचारी में भाव को प्रधानता आलाप का कार्य बोल आलाप और आकारालाप दोनों प्रकार से किया जाता है। स्वरों का भाव से, नजाकत से बोलों में पिरोते हुए तथा शब्दों के अन्तर्गत व्यंजनों व स्वरों श्रुति के अद्भुत सम्मिश्रण के ध्वन्यात्मक बिन्दुओं का ध्यान रखते हुए बोलालाप करते हैं। बंदिश के बोलों के उच्चारण में खुलापन इस घराने में पाया जाता है । बंदिश की प्रत्येक पंक्ति पर आलाप, बोल- बनाव, लय- बाँट, बोल- तान, पुकार व हरकतों का काम होता है। बंदिश में लय-ताल योजना, विशेष लयकारी में बोलों का उच्चारण और उसमें अलंकारों का आकर्षक प्रयोग रहता है। बंदिश में सौन्दर्य तत्व की रक्षा करते हुए लयकारी में बोलों एवं स्वरोच्चारण के माध्यम से विशेष काकु भाव अभिव्यंजना बनारस घराने में पाई जाती है।
- लयकारी करते समय साहित्य के मुख्य रस का ध्यान रखना । बंन्दिश के बोलों का लयकारी में प्रयोग करना तथा बोल, बढ़त, बोल-बाँट आदि में स्वर, लय, ताल का सार्थक संयोजना करना घराने की विशेषता रही। गायन करते समय दुगुन, तिगुन चैगुन, सवागुन, आड़, कुआड़ आदि लयकारियों का प्रयोग के अलावा लडन्त का भी प्रयोग होता रहा है।
- लय, लड़ी - गुथाव कत्तर लपेट तथा कठिन लयकारियों की सहज प्रस्तुति का ढंग।
- तान - प्रस्तार अंग में समझदारी से अलंकारों का प्रयोग होता है। सरल, सपाट फिरत की तान इत्यादि को प्रधानता दी गई । लय के अनुसार ताने चलती हैं। स्वरों को जोड़ बनाकर प्रस्तार करना ही तान प्रस्तार है । यह राग प्रस्तार का ही एक अंग होता है । लय को देखकर लय के हिस्से की तान, बराबरी की तान, सरगम तान का स्पष्ट उच्चारण अलंकारिक तान, फिरत की तान कूटतान टप्पे की तान आदि तानों के प्रकार का प्रयोग किया जाता रहा है।
- गायकी और नायकी में समान रूप से पारंगतता, बन्दिश कहने का ढंग।
- ख़्याल गायकी में ध्रुवपद तथा अन्य गायन शैलियों का भी समावेश है।
- बनारस घराने के संगीतज्ञ एवं शिष्य प्रशिष्य परंपरा में लोग चारो पट की गायकी, यानी ख़्याल के साथ ही ठुमरी टप्पा, कजरी, चैती, भजन-गजल और ध्रुपद धमार के गायन में पारंगत रहे हैं। एक ही महफिल में कभी धमार, कभी ध्रुपद कभी-कभी उपशास्त्रीय संगीत का गायन अवश्य रहता था धमार ध्रुपद गायन की प्रस्तुति विशेष अंग बोल-बाँट, उपज की लयकारी से सजाई जाती रही। तथा ठुमरी गायन के लिए आवश्यक लोचदार कंठ स्वर की नज़ाकत प्रस्तुति, बोलों की प्रस्तुति में भाव की प्रधानता तथा बोलों के माध्यम से पुकार, काकु भाव की अभिव्यक्ति ये सभी गुण बनारस घराने संगीतज्ञों की विशिष्टता में थी तथा ध्रुपद से लेकर लोकगीत तक गायक की परम्परा रही है।
- राग के स्वरों को लेखन उस पर सार्थक शब्द स्वरा की रचना करना, जिसे 'स्वरकल्प' भी कहते है।
- स्वर और लय पर समान रुप से अधिकार होना चाहिए।
- इस घराने की आमद वाली गायकी का अपना अलग ही ढंग है। हर घराने की गायकी को खूबियों की झलक बनारस घराने की गायकी में पाई जाती है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ख़्याल शैली में सौन्दर्य तत्वों का विश्लेषण एवं प्रस्तुतिकरण

ख़्याल का साहित्यिक सौन्दर्य

भारतीय मनीषियों की दृष्टि में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थ हैं। इन पुरुषार्थों की प्राप्ति मानव जीवन का ध्येय है। काव्य और गीत को चारों पुरुषार्थों का साधन बताया गया है। काव्य और गीत का प्रयोजन यश, अर्थ, व्यवहार - ज्ञान, अमंगल की शान्ति, और लोक रंजन है। काव्य को गीत का ही अंग माना गया है तथा काव्य के लिए संगीत शास्त्र में 'पद' शब्द का प्रयोग हुआ है। पद का अर्थ है 'बंदिश' साहित्यिक सौन्दर्य पर दृष्टिपात करने के लिये पदों का विशेष महत्व है। पदों के द्वारा प्रस्तुत गीत के वर्ण्य विषय, भाषा तत्व, रस तत्व, अलंकार तथा छंद आदि साहित्यिक विषयों पर संगीत की दृष्टि से निम्नवत विचार किया गया है-ख़्याल के पदों का वर्ण्य विषय

साहित्य परम्परा की दृष्टि से ख़्याल के पदों में वर्ण्य विषय वैविध्य है। विभिन्न प्रकार की बदलती परिस्थितियों तथा मानसिकता के कारण जीवन के विभिन्न पहलुओं के दर्शन पदों पर दृष्टि डालने पर मिलते हैं। ख़्याल के पदों का वर्ण विषय विविध प्रकार का होता है। जिनमें प्रमुख विषय ईश स्तुति, राजस्तुति, नवरस, कृष्ण लीला, नायक-नायिक भेद, विवाह वर्णन, ऋतु वर्ण इत्यादि वर्णन होता है। विविध विषयों के आधार पर पदों का वर्गीकरण निम्नवत किया गया है-

भक्ति परक ख़्याल

ईश भक्ति- **राग श्री (झपताल मध्यलय)**

स्थाई - प्रभु के चरण कमल,
निश दिन सुमिरिये भावधर सुध भितर,
भव जलधि तर

अन्तरा जोई-जोई धरत ध्यान, पावत समाधान
हर रंग कहे ज्ञान, अब हूँ चित धर रे

गुरु भक्ति **नट भैरव (बिलम्बित एक ताल)**

स्थाई करो कृपा मोपे सद्गुरू
आज शरणागत हूँ तुमरे द्वारे

अन्तरा - दीन दुनियाँ में तेरो ही नाम
'रामदास' विनती कर रखियो लाज

कृष्ण भक्ति **राग जौनपुरी - द्रुत ख़्याल तीनताल**

स्थाई प्यारे कन्हाई न मारो कंकरिया
मोरी फूटेगी सारी गगरिया हाँ हाँ

अन्तरा गगरी फूट मोरी भिजेगी चुनरिया
ताना मारेगी सास ननदिया

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

उत्सव सम्बन्धी

राग धानी - (तीनताल दुतख़्याल)

स्थाई - मन्दलरा बाजो रे बजो रे

मेरे द्वारे मोरे मन मीत आवन किनो

अन्तरा सब सखियाँ मिल नाचो गाओ,

धूम मचाओ पिया को रीझाओं

नायक-नायिका सम्बन्धी

राग बागेश्री (तीनताल द्रुत ख़्याल)

स्थाई बलमा मोरी संग लागली प्रीत

अन्तरा घर आँगना कछु नाहीं भावै

सदारंग देखिये प्रीत की रीत

समय दर्शाती बन्दिशें

प्रात कालीन - राग भैरव (तीनताल द्रुत ख़्याल)

स्थाई जागो मोहन प्यारे

साँवरि सूरत, मोरे मन भावे

सुन्दर श्याम हमारे

अन्तरा प्रातः समय उठ भानु उदय भयो

ग्वाल बाल सब भूपति आये

तुम्हरे दरश के कारण ठाढ़े

उठि -उठि नंद किशोर

सांयकालीन- पूरिया कल्याण (तीन ताल द्रुत ख़्याल)

स्थाई - साँझ भई एरी कुँवर कान्ह अब लो नहि आए।

अन्तरा- कबकी मैं ठाड़ी निहारुँ

नैना भर-भर आये।

रात्रिकालीन - राग बिहाग

स्थाई - मरो मन अटक्यो सुन्दर श्याम

अन्तरा- निशि वासर मोहे पलकन लगत

निकसो जात मेरो प्राण

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ख़्याल का सांगीतिक सौन्दर्य

राग उन कतिपय शब्दों में से एक है जो बहुत से अर्थो का बोध कराता है। हर्ष, शोक, क्रोध, उत्साह आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिये विभिन्न स्वरावलियों के समन्वय को चिंतकों तथा मननशील, कलाकारों ने निर्धारत किया हैं बंदिश राग की एक विशिष्ट आकृति हैं जिसके द्वारा उस राग के स्वरूप को स्पष्ट किया जाता है। ख़्याल की बन्दिशों के द्वारा राग के संगीतात्मक एवं लयात्मक सौन्दर्य को स्पष्ट किया जा सकता है। इसका उदाहरण इस प्रकार है:-

ख़्याल शैली में बन्दिशें अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। नयी नयी आकृति का सौन्दर्य पाने के लिए या एक ही राग की कई शक्ले या रूप दिखाने के लिए बंदिश एक अच्छा तरीका है। ये गीत रागों के उत्तमोत्तम नमूने हैं जो ख़्याल गायन को समृद्ध करते तथा विविधता का निर्माण करते हैं। निम्न उदाहरण यहां प्रस्तुत है

ध्रुपद अंग के ख़्याल

कुछ रागों में ख़्याल की बदिशे ध्रुपद अंग से भी गायी जाती हैं यहाँ राग कल्याण में एक उदाहरण प्रस्तुत है।

राग कल्याण (तीनताल) गदाधर मिश्र कृत

स्थाई - ब्रजधर गिरधर मुरलीअघर घर

धरनी घर माधौ पीताम्बर

शीश मुकुट धरे गोप वेष धरे।

अन्तरा - नगधर पटधर निशान पटघर

चक्र गदाधर अधर सुधा धर जयति

जयति जस जयति जयति सोई कालिय

फन पर चरन कमल वर।

ठुमरी अंग के ख़्याल

ठुमरी के दो प्रकार हैं, बंदिश की ठुमरी तथा बोल बनाव की ठुमरी। इसमें बन्दिश की ठुमरी में शब्द ज्यादा होते है, शब्द और स्वर रचना में कसाव होता है। मात्राओं के वजन का ध्यान रखा जाता है यह छोटे ख़्याल से मिलती-जुलती हैं। द्रुत ख़्याल की ठुमरी अंग की बन्दिश इस प्रकार से है:

राग खमाज - (तीनताल, द्रुत ख़्याल)

स्थाई - न माँनूगीं, न माँनूगीं, न माँनूगीं

पिया के मनाये बिना

अन्तरा जाओ जी जाओ जी जाओ, वे तो अपने रंग के रसिया

न जाऊँगी, न जाऊँगी, न जाऊँगीं उनके मनाये बिना

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

टप्पा अंग के ख़्याल -

बनारस घराने में टप्पा अंग की बन्दिशें भी मिलती हैं जो राग भूपाली में इस प्रकार से हैः (तीनताल)

स्थाई - नू मन जोबन मानदावे

मियाँ सींदी नजरावे खणंदा

अन्तरा - इश्क तॉडा माडे जिंदगी रे दा

हाल 'हुसन' दा कोई मॉ

चतुरंग, त्रिवट एवं द्विवट ख़्याल

चार प्रकार के चीजों को मिलाकर चतुरंग की रचना होती है। जिनमें सार्थक शब्द तराने के बोल, सरगम तथा पाटाक्षर (तबले के बोल) आदि होते हैं। यहाँ एक चतुरंग प्रस्तुत है।

चतुरंग

राग-यमन ताल - तीनताल

स्थायी- चतुरंग हरिगुन गाय सुनावो

हरिगुन गावो सबको रिझावो

अन्तरा- सप्त सुरन अरू तीनी ग्राम

बाईस श्रुति अरु इकइस मुरछन

उनचास कूट तान सुनावो

ग ग रे नि नि ध गं रें सांनिधप, मग मध,

रेंरे सां रें, रें सां निध, म नि ध म ग रे सा -

दिन दिन त न न न दे रे ना दिन

देरे ना देरे ना तदियन देरे ना

धा किट तक धा, किट तक धुमकिट

तक धुम किट तक, तेटे कत गदि गन

तक धुम किट तक, धा तक धुम किट तक धा

तक धुमकिट तक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

त्रिवट

त्रिवट (अहीर भैरव)

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
						ग	ग	ग	म	रे	सा	नि॒	नि॒	सा	रे
						धा	धा	धा	किट	तक	धुम	कट	तक	गदि	गन
ग	-	-	म	रे	सा	-	-	सा	सा	ग	म	प	प	प	प
धा	ऽ	ऽ	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	नग	तिर	किट	तक	तक	तिर	किट	तक
ध	म	प	ग	म	ग	रे	सा								
क्डां	ऽ	धा	क्डां	ऽ	धा	क्डां	ऽ								

							ध	ध	ग	म		ध	नि	मं	
रें	गं	रें	सा	नि	ध	प	-	गं	रें	सां	नि	ध	प	गं	रें
सां	नि	ध	प	म	ग	ध	ध								
ग्				2				0				3			
						ग	ग	ग	म	रे	सा	नि॒	नि॒	सा	रे
						स	ब	गु	नि	ज	न	ति	र	व	ट
ग	-	ग	म	रे	सा	सा	सा	ग	म	प	-	प	-	पध	नि
गा	ऽ	न	क	रे	ऽ	त	ब	गु	नी	मा	ऽ	ने	ऽ	नाऽ	ऽ

द्विवट - राग रागेश्री (तीनताल)

स्थायी: तन ओदरे दानि तन दिम् तन

देरेना देरेना तदियन देरेना

अन्तराः नाद्रे दानि तुं द्रे दानि दिम तन नन नन

देने ना देरे ना देरे ना देरे ना तारे दानि

धा किट तक धुम किट तक गदिगन तकिट धाड धा, धा धा धा

धाति धा धाति धा धाति धा

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

भजन अंग का ख़्याल

भक्ति परम्परा के 'पद' ओर सगुण भक्ति परम्परा के 'पदपदान्त' तथा कीर्तन से विकसित ओर पल्लवित हो कर आई हुई इस विधा में भावाभिव्यक्ति की पराकाष्ठा है। ईश स्तुति इसका मुख्य विषय है।

स्थाई- मैं तो पे वारी वारी जाऊँ

मोहन तोरी बंसी नेक बजाऊँ

अन्तरा- जो तुम मोहन राधे बनोगे में

मोहन बन जाऊँ।

अन्तरा- जो तुम गोकुल गाँव बसत हो

बरसाने को आऊँ।

रामदास के तम हो स्वामी चरण कमल चित गाऊँ।

स्वरार्थ प्रबन्ध के ख़्याल

इस गीत की पद रचना उसके राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों के वाचक अक्षरों (सारे गम पधनी) बनने वाले शब्दों से रचित होती है ओर उन स्वराक्षरों के द्वारा सार्थक रचना बनाई जाती है।

राग यमन त्रिताल मध्यलय

स्थाई- नीर गगरी गिरी नार सो मग में री

अन्तरा मग में ध्यान सरी श्यामरंग

रंगीरी सरस रस सो सनी धरी

पगरी गिरी गगरी।

ख़्याल की बंदिशों में लयात्मक सौन्दर्य:

बनारस घराने की द्रुत ख़्याल की बन्दिशे लयात्मक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं द्रुत ख़्याल की बन्दिशों में लयात्मक स्तर पर सौन्दर्य के बहुत से स्थल है जिनसे राग रूप के सौन्दर्य में वृद्धि तो होती है साथ ही ताल पक्ष भी मजबूत होता है। लयात्मक स्थल के सौन्दर्य को निम्न रूप से दर्शाया गया है।

सम से पहले बन्दिश को उठाना - (लय पर आने का एक अंदाज है)

स्थाई- बादर की धमक सुनी जबसे कानन,

तबसे जियरा एक दिन नहीं धरत धीर

अन्तरा दादुर मोर पपिहा शोर मचावत

कोयल की कूँक अतही मन भावत
रामदास के मोहन प्यारे हरत दरदी सकल पीर।

पं0 साजन मिश्र जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

अत एव एक ही राग में विभिन्न प्रकार की बंदिशों से राग का सौन्दर्य ही नहीं बल्कि उस राग के चलन तथा प्रकृति की भी जानकारी होती है तथा साथ ही एक ताल में अनेक बंदिशों से ताल भी मजबूत होती है।

निष्कर्ष

अपनी विशिष्टताओं के कारण बनारस की ख़्याल गायन - परम्परा संगीत - जगत में अपनी अलग पहचान बना रखी है। गीतों की बंदिशें गीत गाने का ढंग, स्वर लगाने की पद्धति, आलापचारी, लयकारी - यही सब मिलकर घराने का निर्माण करतें हैं। ये सभी चीजे सभी घरानों में मिलती है, इसमें कोई संदेह नहीं है, परंतु उनका कम एवं अधिक प्रयोग और प्रयोग का खास ढंग घराने को निराला ही बना देता है।

संदर्भ सूची

1. मिश्र कामेश्वर नाथ (1997) काशी की संगीत परम्परा, भारत बुक्स प्रथम संस्करण, नई दिल्ली
2. मिश्र शम्भुनाथ (2002) हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परम्परा, प्रकाशन विभाग, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली
3. पर्वतकर वनमाला (2012) संगीतमय बनारस, डी.जी. पिं्रंटर्ज, खोजवाँ वाराणसी
4. मुखोपाध्याय दिलीप कुमार (1977) भारतीय संगीत का घराना इतिहास, ए. मुखर्जी खण्ड कम्पनी प्रा.लि. कलकत्ता।
5. पं. साजन मिश्र के साक्षात्कार पर आधारित
6. रजनीश मिश्र के साक्षात्कार पर आधारित
7. प्रभाकर मिश्र के साक्षात्कार पर आधारित